



पीयूषलहरी

अर्थात् गङ्गालहरी

पण्डितेवर जगन्नाथत्रिशूलि कृत

जिसमें

श्रीमहाराणी गंगाजीका चरित्र उत्तमरीतिसे वर्णित है

जिसे

अत्यन्त कठिन पाण्डित्यपूरित विचारिकर श्रीमहारा-
जाधिराज राजेन्द्र महाराज परमधर्मज्ञ प्रजापालन
तत्पर भूलोक पुरन्दर बैकुण्ठागार वालीय भरतपुर

श्रीमद्बलवन्तसिंह बहादुर बहादुरजंगकी आज्ञा

पाय बलदेवसिंहने अत्युत्तम कवित्तोमें प्रति

श्लोक अनुवाद कियाथा ॥

उक्त श्रीमहाराज बहादुर भरतपुरके चरणसेवक

बलदेवसिंह वैश्य खण्डेलवाल पेशकारात्मज

गोपालसिंहके उद्योगसे ॥

दूसरीबार

लखनऊ

40

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के यंत्रालयमें छापी गई

नवम्बर सन् १८९० ई० ॥

इकमहफूज है बहक इसछापेखानेके ॥

भूमिका ॥

विदितहो कि श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीब्रजेन्द्रमहाराज परम धर्मज्ञ प्रजापालन तत्पर भूलोक पुरन्दर परमउदार बैकुण्ठागारवालीय भरतपुर श्रीमत्बलवंतसिंह बहादुर बहादुर-जंगने अपनी कृपातिशय प्रकटकरनेके हेतु मेरेपिताजीको आज्ञा दीथी कि आजकल संस्कृत विद्याका प्रचार न्यूनहोता जाता है लोगोंकी बुद्धि अतिकुण्ठितहै इससे कोईपुस्तक भाषानिवन्धसे उल्थाकीजाय, इसआज्ञानुसार पिताजीते पण्डित राजजगन्नाथ त्रिशूलीकृत पीयूषलहरीको उल्था प्रतिश्लोकसंस्कृतसे भाषामें किया, श्रीमहाराजने उसउल्थाकोदेख अतिप्रसन्न मनहोकर एक लेखक गिरिधरनामीको नौकरकरके केवलइसकीप्रति लिखानेको नियतकरदिया कि यत्रतत्र इसकीप्रति प्रचलितहुई परंतु यन्त्रालयकाप्रचार ऐसाअधिक न था देशीरीतिपर पुस्तकें लिखीगई इससेप्रचार अधिक न हुआ और इसउल्थाके उपरान्त हनुमानाटक संस्कृत ग्रन्थकाउल्था विचित्र रामायणनामसे विख्यात उक्तश्रीमन्महाराजकी आज्ञानुसार कियागयाथा कि वहउक्तरीति अनुसार लिखलिखकर प्रचलितहुआपरंतु जैसाशीघ्र और सार्व-जनीन विदित अबयंत्रालयद्वारा पुस्तकोंका प्रचारहोताहै वहकहां इसलिये जोउल्थाप्रथम आज्ञानुसार बनायागयाथा उसकासार्व-जनीनप्रचार होनेके हेतु श्रीमन्महाराजाधिराज बैकुण्ठागारकी कीर्ति और परलोकनिवासी पिताजीकीकृति प्रकट करनेको यह उल्था पीयूषलहरीका छपवायागयाहै शब्द अर्थका संस्कृतकेअनुसारहोना और रीतिविरुद्ध नहोना इसउल्थासे प्रकटहै परम्परासे श्री मत्ब्रजेन्द्र वालीय भरतपुरके चरणसेवक बलदेवसिंह वैश्य खंडेलवाल, पेशकारनकम, तत्पुत्र गोपालसिंहकी यहप्रार्थना है

(२)

कि इसपुस्तकमें जोकुछ लेखक प्रमाद आदिकसे भूलचूक देखै
वहक्षमाकरै और बनादें और इसश्लोकके आशयको यादकरै ॥

श्लोक ॥

गुणायन्तेदोषास्सुजनवदनेदुर्जनमुखे
गुणादोषायन्तेतदिदमिति नोविस्मयपदम् ॥
यथाजीमूतास्येलवणजलधेर्वारिमधुरं
फणिःपीत्वाक्षरिवमतिगरलंदुस्सहतरम् १ ॥
सत्सङ्गाद्भवतिहिसाधुताखलानां
साधूनांनचखलसंगमात्खलत्वम् ॥
आमोदंकुसुमभवंमृदेवधत्ते
मृद्गन्धेनहिकुसुमानिधारयन्ति २ ॥



पीयूषलहरी

अर्थात् गङ्गालहरी ॥

क० ॥ सकल मही को परिपूरण सौभाग्य यही वेद
 औ पुराणनको सरबससारहै । लीलाही करिकै जिन
 अखिलरच्यो है जग ऐसेत्रिपुरारिजूको बैभवउदारहै ॥
 देवनकोसुकृत अमोघप्रकट्योहैसही सुधातैंसरिससुतों
 शोभाको अगारहै । सलिलतुम्हारे गंग मंगलहमारो
 नित पादपअमंगलको काटन कुठारहै १ दारिदजनित
 दीनताईकेविदारनके कारणहै जिनको ते दृष्टि तैं निहारै
 हैं । जिनकेहृदय दुरबासनानहूतैं युक्त ऐसे पावरनहूँ के
 पापनको हारै हैं ॥ मनकी अविद्यादीह द्रुमताहि काटन
 को शिक्षाके करनहार तिनहि उचारै हैं । दायक हैं श्री
 के हमैनीके मात गंगतेरे वारिके प्रवाह चाहै सकल सु-
 धारै हैं २ उदयमत्सर तातैं प्रकट्यो कपट जाके जननी
 विनायककी कोषके कटाक्ष संग । बारबार तिनको चला-
 इकै निहारैं तुम्हें यातेई विदित कदैँक्षोभके भरेतरंग ॥
 तेईवे अपारसब सुखके भँडार सदा करत बिहार ईश

शीशपै लिये उमंग । सकलहमारेतैं दुरित भरभंगकरो
निकसे तो अंगते तरंगजे उतंगगंग ३ कबहूँही सुकृत न
कीनो जिनतेऊतुम्हें सुमिरैं त्यों तिनहूँकी तंद्राको हरत
हाल । जैसे मारतंडकी प्रचंडजे मयूष सदा सबै अंधकार
को बिदारतहैं ततकाल ॥ सेवत सकल सुरनिशिदिन जल
जाको ऐसी तेरी मूरति सो चूरति अघविशाल । सोई त्रय
ताप मेरीब्याधि व्यथा अंतरकी एहोमातगंग तिनहैं भंग
करो द्वै दयाल ४ तेरे आसरेते बलपायकै विशाल गंग
बढ़योगर्वजाकूँ सोमैं तुमसों कहतसब । याही तैं वंदारक
वृन्दनकी अवज्ञाकरी काहूकी न अबलगिमानी कछू
दाहदब ॥ जोपै कहूँ यासमैं उदासता गहौंगी अंब तो
मैं निराधारनाहिं दूसरो अधार भव । मुख बिलखाय
अति दीनता दिखाय कहौ कौनके अगारी जाइ रुदन
करुंगो अब ५ तृण ज्यों तुरंत निजराज त्यागितेईनूप
तेरे तीरहीको आय आसरो चितैधरैं । बैतकीलता बि-
लोल चैत चांदनीसे गंग तेरे वे तरंगनकी शोभाजे मनै
हरैं ॥ तिनको दरसकरैं सरस पीयूषहू ते स्वादित तु-
म्हारो जल पेट तृप्ति द्वै भरैं । ऐसेजे सदाईजन आनंद
उमंगभरे तुच्छ जाति मुक्तिकीहू हाँसीते कखो करैं ६
तेरे वे प्रवाह में प्रभात काल न्हात आय रमणीनरेशन
की आनंदको ब्यायकै । तिनहीं के कुच लपटानो हुतो
मृगमद सोवह पखरिपखो तेरेजलआइकै ॥ जिनजिन
को हुतो सुतेई वे कुरंगयूथ अतिही अनूप दिव्यरूप
को बनायकै । सेवितहैं वंदारक वृन्दनसों चहूँओर की-
नो तिननंदन उद्यानबास जाइकै ७ एकबार सुमिरण

करतजो नेक तुम्हें तिनके पवित्र उरअंतर करतज्यों ।
 काननकोप्यारो यहनाम जो तुम्हारो अंब मुखतैं उचा-
 रतही पातकहरतन्यों ॥ औरैयाजगत की जो दारुण
 त्रिविधिताप तिनके बिदारन में बारनधरतन्यों । प्राण
 के पयानसमै सोई तुमनामगंग गंगकरो मेरेमुखकंजमें
 विलासयों ८ मंदाकिनि तेरे तीर तिनके निवासी जन
 जिनके जनममृत्यु दुखको करेंनिपात । परमसंतोषभरे
 क्रीड़ातहांकरैं काक तिनहूंकी महिमा विशाल सो कही
 न जात ॥ बासी चिरकालनके सबसुखराशीतेई बासव
 के बैभवको तुच्छि गिनैं सबै भाँत । सोईतीर तेरे भव
 भीरंके हरनहार होउधीर मेरेश्रमकाटन को गंगमात ९
 तेरो शुद्धतत्त्व जो अकथ्यमात गंगतामें जीवनकी मन
 बुद्धि बानीहूं नजावै है । जातरह्यो भेद जिन बेदनको
 तिनहूँते ताकोभेद कैसेहूँ जु कहतन आवै है ॥ याही तैं
 अखंड निराकार नित्य एकरस निजतेज तिमिर अ-
 ज्ञानको नशावै है । खोजि खोजिहारे हैं विरंचि विष्णु
 वामदेव मेरीजड़बुद्धि ताहि कैसेकरिपावै है १० बड़ेबड़े
 दानयज्ञ करतविधाननकेनिहचल लायध्यान आलस
 को लावैना । करैं तपघोर जेसमूह चिरकालतऊ अति-
 हीअगम हरिपद ताहि पावैना ॥ एहोमात याते तेरी
 महिमा अतुलसुतो काहूविधि कैसेहूँ जुमोपै मलि आवै
 ना । सोई पद सहज अखिल जगजीवनको देतै मात
 गंगनेकबारहिलगावैना ११ क्रोधसों मलिनमुख ऐसी
 उमाबारबार बरजै परमहठ करि पशुपतिकों । तिनहूँ
 को हठतजि सादरसमेत तुम्हें धारैनिज शीशपै प्रमोद

मानि चितकों ॥ मंगल करनवारी मूरतितुम्हारीताकी
 बरनैको लोकमाहिं महिमाकीगतिकों । जाकेनेक दर-
 शन करतेही जीवनके दूरिहोत भवभय पावैशुभमति
 कों १२ निंदित जेकीने हैं उन्नत उनमत्तनिहू संसकार
 हीननिहू नेकनाहिं आदरे । जिनके सुनेतैं हिंसक निहू
 के रोमहोत हेमके हरैया आदि तेऊतिनतैं डरे ॥ जिन
 हूँकेतारन में आलस न लावतहौ पातकीनहूँतैं महापा-
 पनके आगरे । अधिक सबहीते तो महिमाकहांलौकहों
 तैंने गंगलोकनके पातक परैकरे १३ सकल महीतल
 को शोकदूरिकोरिबेको आओ सुरलोकतैं विचारिकैदया
 हिये । बांधी जटाधरने जटाकेजूट ग्रंथमाहिं यातैंहीरहैं
 हमउरमें विचार किये ॥ करैनिरलोभनके मनकोसदाई
 लोभ सो तौ याप्रकारके तुम्हारे गुण मानिये । तिनही
 गुननको सकलभांतिही सों यह एहो मात मंदाकिनि
 फैल्यो दोष जानिये १४ नैननतैं अंध और पावनतैं
 पंगुजे सुभावकरि बहैरे जिनकी जड़मति है । उक्तिनतैं
 विकल ग्रसेजेभूतप्रेतनिहूँ त्यागे देवतानि तिनपाई नर्क
 गतिहै ॥ अस्तभये जिनके सुकृत पापमोचन जे सबै
 आधि व्याधिनतैं पीड़ित पतितहै । ऐसे मानवनहूँको
 रक्षाकरिबेको गंग औषध प्रसिद्ध तोसी तूही दरशति
 है १५ सहजही शीतल सुभाव करि निरमल ऐसेगंग
 तेरेजल तिनकी महिमाअपार । बानीमनकरिकैहूँ कह
 तैं बनत नाहिं फैलिरही अवनीपै सबहिन तैं उदार ॥
 ताही महिमाको सुत सगर महीपति के उज्ज्वलअनूप
 द्युति दिव्यरूप धारिधार । अंग अंग पुलकैं ते आनंद

उमंगन सों अजों दिवलोकमाहिं गावतहैं बारबार १६
 किये क्षुद्रपापन की तापनतप्योहै मन ऐसे मानवनको
 ना कठिन बिचारहै । जिनके उधारनको एहोमातमंदा-
 किनि सुतौ तिहूँलोकमाहिं तीरथअपार है ॥ पापनके
 रूप पापकरत न मानैशंक पापनको कबहूँना कीनोनि-
 स्तारहै । काऊ नैनतारे अपनाइते उधारे यातैं सबते
 अधिक तेरी करनीउदार है १७ धर्मको निदान अरु
 आनंदनवीननको कहतनआवे ऐसोसुंदर बिधान हैं ।
 अमलअनूप तिहूँ लोकनको वस्त्ररूप तीरथ समूहन
 के मध्य में प्रधान हैं ॥ सकल कुबुद्धिर्न की बुद्धिन को
 शुद्ध कहै इन्दिरा अपारको उदार असथानहैं । हरौ सो
 हमारो भवतापको समूह गंग जननी तुम्हारो बपु क-
 रुणा निधान हैं १८ धनमदिरातैं छके राते अतिमाते
 दृग घूमत हैं बारबार भरे अभिमान हैं । ऐसेजे महीप
 तिनहींके आगे दौरिदौरि बड़ो खेदजाकू ऐसो अम्यो
 बिनामान हैं ॥ औरै सब सुकृत समूहनको नाशक में
 बड़ी जड़ बुद्धि जाकी अबिधि अजान हैं । मोकूँजो या
 लोकमें तुम्हारो है वियोग गंग सोई यह मेरे अपराध
 को निदान हैं १९ पौनकी भकोरसंग चंचल तरंग तेरी
 तिनतैं चलायमान पंकज कतारहै । ताही तैं परागको
 समूह रेणु पख्यो अम्बु केसरिके रंगजाकी उमाउदार
 है ॥ औरै देवनारिनके कुच जिनहीतैं गिख्यो अगरको
 कीच मिल्यो तेरी जल धार है । सोई वह मेरो जगजाल
 ताहि दूरिकरौ जंघापरियंत वारिशोभाको अगरहै २०
 प्रथम रमापतिके चरण युगल कंज निर्मल नखन तैं

तुम्हारी उतपति है । दूजे ईश शीश जटाजूट को भवन किये
 करत निवास तू बिनोद सरसति है ॥ तीजे नष्टजीव
 पातकी नहूँ के तारण की विधि है जे तिनमें तुम्हारी आ-
 सकति है । देखि न सकत दुःख दीनन को एहो गंग कौन
 हेतु ते प्रभाव तेरो ना जगत है २१ शैलन के शिखर स-
 मूहन ते स्वच्छ अति सरिता अनेक चली आवत हैं धा-
 इकै । तिनहीं के मध्य ऐसी और कौन सी है जो महेश
 जटाजूट चढ़ी अति सुख पाइकै ॥ धोये कहो कौने पद
 कमल रमापति के अपने जलन सों मुदित मन भाइकै ।
 सुरधुनी याते तेरे लेश के समान सरि और दूजी नाहिं
 ताहि कहें कवि गाइकै २२ होइकै निशंक विधि जैसे होय
 तैसे सुतों कस्यो करो ध्यान को समाधिहि लगायकै । सो-
 यो करो सुख सेज शेष की रमानिवास निरंतर नाच्यो करो
 शम्भु मन लायकै ॥ सबै पाप मोचन के सकृत् समूहन
 ते हूजिये हमहिं परि पूरण सुभायकै । औरै तप दान के
 प्रयास सों न काम कछू जो पै जग जागौ तुम गंग सुख
 पायकै २३ मैं तो हूँ अनाथ तुम नेह करियुक्त मात नष्ट
 गति मेरी तुम शुद्ध गति दानी हो । डूब्यो भवसागर में
 तुम विश्वतारणि हो मैं रोग पीड़ित तुम सिद्धि वैद्य
 मानी हो ॥ मेरो तो हृदय मात तृष्णा करि ब्याकुल है सु-
 धा को समुद्र आप वेदन बखानी हो । याते शिशु शरणि
 तुम्हारी तकि आयो अब उचित विधान सोई कीजै तुम
 स्यानी हो २४ जादिन सों तेरी महि मंडल कल्याणी कथा
 प्रकटी है तादिन सों कौतुक यों छायो है । यम के नगर माहिं
 पातकी पुकारत हैं तिनको जो कोलाहल दुसह बिला-

योहै ॥ याते यमदूतदुरिदुरि जाय जहां तहां दूढ़िबे को
 प्रेतनको यतन उपायो है । औरै देवतानके बिमाननके
 यूथ मिलि दिवकी गलीन दलि धूमसों मचायोहै २५
 काम और क्रोध दोनोंदीपित दवागनि ज्यों तिनहीं ते
 प्रकटी प्रबल जटाभरहै । ऐसो जो प्रचंड ज्वरताको जो
 समूहतातेबसभयोपजरतमेरौबपुबरहै ॥ पौनकेसकाशते
 प्रकाशमान गंगतेरेजलकेतरंगनको काणिका निकरहै ।
 तेई वे हमारे दिन दिन प्रतिदूरि करौ एहो मात दिव्य
 नदी तापन के भर है २६ जाके मध्य चर थिर जीव
 सब बास करें जोई तिहुँलोकनको एकओकहै उदार ।
 सोई ब्रह्मण्ड ताकी तरल तरंगनसों तिंदुकके फलसम
 तामें चलै बारबार ॥ औरै त्रिपुरारिके अपार जटाजूटन
 में जिटिरह्यो जोई शोभा सुखको सकल सार । सोईयह
 मात तेरे जलनको ब्रात अबहरौ सो हमारौ तन ताप
 को अखिल भार २७ जाके तारिबेकीविधि तामें तत-
 काल इहां तीरथ समूह सुनि लाजन मरत हैं । औरै
 त्रिपुरारिं आदि देवता सकल जाके पातक विचारिकर
 कानन धरत हैं ॥ दयाकरि कोमल हृदय जाको ऐसी
 तुम पापी जुमैंऐसो ताहि पावनकरतहैं । याही ते तुम्हारे
 गुण तीरथ सुदेवनको पातक मथन गर्व खंडन करतहैं
 २८ पापनकी अमितचिकित्सानहूते मनतिरुके चलाय
 मान कै रहै निडर है । ऐसे श्वपचनके समूह तिनहून
 तजी तिनहींकी मलिन सभानको निकर है ॥ जिनही
 सभानको सदन ऐसो पातकी मैं ताहू के उधारन को
 बांधौ परिकर है । ऐसी तुम एहो मात तिनकी बड़ाई

ताहि करिबेको समरथ ऐसो कौनतर है २९ यह चिर-
 कालसों तुम्हारे अभिलाषहौ कि ऐसोमोहिं अबलगि
 पातकी मिल्योनही । जाके तारिबे ते यह सकल जगत
 मध्य विस्मय अपार सबहिनकै भख्योसही ॥ सोई यह
 मैतौ सुर तटिनी तुम्हारे तट अतिही सनेहकरि चाह-
 ना चितै यही । आयोसोई कीजिये सफल ताहि एहो
 गंग जोई अभिलाष माततुम्हारे मनैरही ३० निशि
 दिन मेरी नीचसेवनमें आसकति त्योंहीं वृथावचनको
 करिबोहै बारबार । औरै ज्यों कुतर्कन मेंकीनोहै प्रचार
 मैंने भूठीपर चुंगलीको मननकरनहार ॥ मेरे या प्रकार
 के अपार गुण तिन्हें सुनि सुनिकरिएहो मात तुमहीं
 करो विचार । छिनहुं जो मोसे पातकीको मुखदेखै ऐसो
 तुम बिना और कौन जगमें अतिउदार ३१ एहो मात
 गंग या जगतमाहिं जिनहीके हुये जो विशाल नैन तोपै
 कहा काम हैं । जिनसों न कबहुं परम रमणीक अति
 मूरति तुम्हारी ना निहारी अभिरामहैं ॥ औरैजिन प्राणि
 नके श्रवण उदारमात बारबार तिनकोधिकारं परिनाम
 हैं । जिनसोंन कबहुंतुम्हारी जैतरंगनको कलकलशब्द
 जोसुन्योन सुखधामहैं ३२ सुकृतीपुमान तौस्वइच्छाते
 बिमानबैठि जातसुरपुरको प्रमोद उरलाइकै । औरैपर-
 वशहोइ पातकी अपारतहां नरकनभीतर परतदुखपा-
 इकै ॥ अशुभमयमूरति जादेशकीतादेशहूमैरहतविभा-
 ग यहऐसनितछाइकै । लीलाकरिकेई जिनपातकवि-
 नाशकीने ऐसीजहां तुमनाविराजो मातआइकै ३३ मा-
 रतदुजनहीको गुरुत्रियइच्छाकरै हरैजेकनकअरुकरै

मद्यपानहैं । ऐसेहू अपारपातकीजे मातअंतसमय त्या-
गतशरीरनिज तेरेविषेआनिहैं॥ बड़ेबड़ेदानी बहुयज्ञ-
नकरनहारे जात जिनलोकनमें सुकृतविधानहैं । तिन-
हूतेऊपर विमानवैठि क्रीड़ाकरैंकरैंदेवजिनके चरण स-
नमानहैं ३४ सुमनसमूहको अलभ्यमकरंद जाकूं जो
वहपवननिशिबासर चुरावैहै । बिरहकृपाणजाते पीड़ित
बिरहीजन तिनहूँके प्राणनको छिनमेंदहावैहै ॥ लीला
करिचलित लहरितेरी तिनहींको क्षोभताते ऐसोहू प-
वित्रहोइधावैहै । दिनप्रतिसो वहसमीर तिहूँलोकनको
पावनकरत और पातकनशावैहै ३५ कैतेतौजगतमा-
हिंमानव निरंतरयालोकको अरथरचै शुद्धमनजिनको ।
कितनेहू ऐसेपरलोकनमें प्रीतिकरैं कष्टरीति साधिकै न
करैं लोभतनको । मैंतौमातगंग कृपारावरीकोसंगपाय
सैनकरो सुखसजि तजिकै यतनको । सबैभांति निहचैं
कपटत्यागितेरेविषे धारणकरचोहै भारदोनूं भुवननको
३६ पाखंडी पतितऔअधम संसंकारहीन ऐसेमानवन
कीजे सुनियेसभामही । तिनहीसभानकी सहायकरिबेकू
जैसे आपसमरंथहौ सनेहकरिकेसही ॥ त्योंहीमातगंग
दुरितनके समूहनमें मेरोहूसेनेह निशिबासररहैयही ।
यातेजोसुभावजाको जैसोयाजगतमाहिं काहूबिधिकैसे
हू जुत्यागतबनैं नही ३७ समयप्रदोषतामेंनृक्षकरैं ऐसे
शिव तिनकीजोलीलाताते उद्धतजटाअपाराजिनकोजो
अंतजामें चंचलतरंगतेरी तेईजिमिकांपतहैं भुजानको
विसतार ॥ बिलमाहिं क्रीड़ाकरैं ऐसेजलताकोरव सोई
मनोंचहूँओर डमरुनको डंकार । देवसरि तुम्हारो या

विधिको तांडव नृत्यसो वह हमारोहरो तापको अखिल
 भार ३८ तेरेविषे धारणकखोहैं मैंसकल विधि कुशल ह
 मारो जाकी चिंता ताकोभारहै । जोपैयाविषम समै एहो
 मात मंदाकिनि त्याग न करोगी मोसे पातकअगारहै ॥
 तौ जो शरणागत सहाय बिसवास तेरो कै है त्रिभुवन
 मैंते अस्तइहवारहै । दीन प्रतिपालकजो करुणातुम्हा-
 री अब सोऊ यहनिहचैही होगी निराधारहै ३९ उछ-
 रिजटाके जूटन तैं त्रिपुरारिजके खेलतसीमंत कीजै शर
 णी मैं लैउभंग । देखततिनाहिं ऐसे पारवती बाम अंक
 अतिही सनेह ताते बैठीहुतीपतिसंग ॥ मानिकै सपत्नी
 जो कोमलद्युति मान हाथ तासोंकरै दूरि तिन्हेंकोपभरी
 अंगअंग । सोई नित अधिक सबन ते उदयकिये बर-
 तो अनंद भरी तेरी ये तरंगगंग ४० पूजनीक तुम जो
 तिनको याजगतमाहिं कौनसे हैं जिन्ने नाहिसरनि वि-
 धानिये । फलकी जेइच्छाकरै इच्छाफल तिन्हें देत सो
 यह उपाधिगंग मेरे उरमानिये ॥ मैं तो मात शपथ तु-
 म्हारी खाइ कहों अबै यामें आपनेक कछू भूठनाहिं
 जानिये । मेरो मनतुम विषे सहज सुभावहीते करत
 सनेह यह निहचै प्रमानिये ४१ एकबेर सहज सुभाव-
 हीते जगमाहिंजीवजे हैं तिन्ने ताको तिलक लगायो
 भाल । जिम्को अज्ञानसोई तमके समानताहिदूरिकरि
 बे को सोतरनकी किरणिभाल ॥ औरैजो बिरांचि खोंटे
 अंकनकी पांति लिखी ताही छिनतिनको मिटावत है
 ततकाल । सोई वह मृत्युका मनोहर तुम्हारीगंग दूरि
 करो मात मेरे शोकको समूहहाल ४२ तोते वितरिक्त

देशजिनमें आसक्त मन जिनहीके ऐसे जे मनुष्यमति मन्दहैं । तिनकी फूलनके समूह फूलिबेके मिस करिके करतसदा हाँसीजे बलंदहैं ॥ औरै अपने जो मकरंदते पवित्रकरैं आवैं जो अलीनके महामलीन बन्दहैं । तेई वे हमारे नितसखा होउ मंदाकिनि तेरे तीरके जे तरु आनंद के कन्दहैं ४३ एकजे पुरुषहैं ते जिनकी कठिन सेव ऐसे देव तिन्हें करें यजन विधान हैं । तिनते अपर यम नियम प्रमाण करें कितनेहू विधिवत करत वितान हैं ॥ मैं तो गंगनाम नित सुमिरण तेरो करों जाते भये पूरेसब कामके निदान हैं । याते मैं जननी जो विशाल यह जक्त जालजानतहों जाकोतृणजालके समानहैं ४४ जन्महीते आदिलै निरंतर सकलविधि करत सुकृत ऐसे संतजे सुजानहैं । तिनके तोहित करिबेको मात मन्दाकिनिकौनसे न जगमाहिं देवता प्रधानहैं ॥ अस्तभये सब अवलम्ब जिनहीके अरुकीने तिनकबहुंना सुकृत विधान हैं । ऐसेपुरुषनको या लोक परलोक माहिं तुम बिना और कौनहितको निदानहैं ४५ शीघ्रही तुम्हारो पय पानकरि एहोमातजात भयो क्रीड़ाको विमूढसखा संगमें । जाग्योदिनरैनि बहुख्यालनमें पाग्योरह्यो पायो बिसराम कोनलेशकहूं गंगमें ॥ दयायुत हृदय तुम्हारो जानिआयोअबनिद्राबश व्याकुलआलस भैरयो अंग में । पौनके प्रचारनसों शीतलजोताके मध्यस्वाओचिरकाल मोहिं निज उतसंग में ४६ कटिपै लपेटि खेंचि एहोमात मंदाकिनि बाँधो दृढ़तासों परिकरहि सम्हारि कै । बालक मयंक ताहि व्यालके समूहनसों निहचल

क्रीटबीच धरियेसुधारिकै ॥ साधारण और जेमनुष्य-
नके तारणकी बुद्धिते अवग्यामेरीकरो ना निहारिकै ।
होहु सावधान अंगसाहस बिधानकरि मेरे तारिबे को
यहसमयबिचारिकै ४७ शरदमयंकके समानश्वेत अंग
छवि शशिखण्डमंडित मुकुट द्युतिमानहैं । जाकी चारु
चारिहू भुजान में विराजमान कुम्भ औरपंकज अभय
वरदान हैं ॥ अमृतकी धारासम धारें बस्त्र आभूषण
बढ़ी श्वेत मकर पै शोभाको निधान हैं । ऐसो जो तु-
म्हारोबपु ध्यानकरें एहो गंग तिनको जगतमें न होत
अपमानहैं ४८ रातिद्योस जिनके जगत ज्वालजालन
सों भुँजेअंग ऐसेनर तिनको दयासमेत । मंदमुसका-
निते प्रकाशितबदनज्योतिजाकेजेतरंगसुधातिनतेजि-
वाइलेत ॥ औरैचैतन्यरूप स्वच्छचांदनी समूहजाको
जो चमतकार ताकोबिसतारदेत । ऐसीतुमसंतनकीअं-
गनाजुएहोमात अबतौबिधानकरो मेरोकल्यानहेत ४९
यहसंसाररूप ब्यालबिकरालजानै डस्योअंगजाको सो
में पीड़ितहों आठोयाम । मीलितसे मंत्रभये डरेदेवदेखि
ताहि ओषधिप्रभावजापैनेकनकरतकाम ॥ गरुडसंबंधी
जे पाहन फूटि छारभये खिसले हैं सघन सुधाके रसहू
उदाम । कालीके दमन जाके चरणपखारे तुम हरौ सो
हमारौताएहोगंगसुखधाम ५० सर्पत्वकी श्रेणीगज
चर्म औ प्रमथ यूथ नंदीश्वर इंदु इन्हें आदिलै उदार
भव । जूवामाहिं सरबस्वहारिकै बिचारि तुम्हें दावबिषे
धरिबेकी कीन्ही उरइच्छा जब ॥ जानिकै भवानी यह
मंद मंद हांसीकरि एहोमात मंदाकिनि तुमको निहारैं

तब । चंचल उतंग याते फैलीजे तरंगघटा तिनको तां
 डवसो पवित्रकरौ हमें अब ५१ ॥ छंदगीतिका ॥ कीनौ
 विभूषित मदन रिपुको जिनहिं उत्तम अंग है । जोई
 अनेक न दीनजनकी करत आरत भंग है ॥ मनहर
 उतंग तरंग जाकी चलत आनंदकी भरी । सोई हमा-
 रे अंग तिनको करौ पावन सुरसरी ५२ अभिराम
 नाम पीयूष लहरी सकल मंगलकी भरी । यह जग-
 न्नाथ उदार पण्डितराज ने निर्मित करी ॥ इकद्योस
 मिश्र उदाम सबगुण ग्रामरूप सुरामनै । इमिभांति उर
 अभिलाष करि आयसु दई सुखधामनै ५३ यह देव
 बाणी संस्कृत अति कठिन समुझि न आवही । मति-
 मंदनर कलिकालके किहिभांति अर्थहि पावही ॥ याते
 अरथ अनुकूलयाके जातमन हितलायकै । समझैं स-
 कलनर भाषतामैं रचौं छंद बनाइकै ५४ यह धारिआ
 यसु शीशगुरुकी बुद्धि निजअनुसारही । बलदेव वैश्य
 खंडेलवार विचार जिन भाषा कही ॥ जे पढ़हिं याहि
 पढ़ावहीं अरु सुनहिं श्रवण करावहीं । तेई अनुग्रहगंग
 की जयसंपदा नरपावहीं ५५ ॥ सोरठा ॥ शशि नभ
 नवभुवजानि हियअतिमोद बढ़ाइकै । सकलसुमंगल
 खानि यह पीयूष लहरी रची ५६ ॥

इति श्रीपीयूषलहरीसम्पूर्णा ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के यंत्रालयमें छापीगई
 नवम्बर सन् १८९० ई० ॥